Rice field day cum training program under NASF Project

Under the NASF funded Project "*Development and validation of Need based technology delivery model through FPO in eastern region of India*" a one day training cum field day on improved rice cultivation was organized on 17th October 2020 at Dephi Village of East Champaran. In this project Two Rice varieties *Swarna Shreya* and *PUSA Sugandha 5* were earlier distributed during the *Kharif* season to the members of Champaran Farmers Producer Company Limited, East Champaran. In the field day program a feedback cum frontline demonstration was organized by the project team, Dr. Anirban Mukherjee, Dr. Dhiraj Kumar Singh, and Dr. Kumari Shubha with coordination from Mr. Avinash Kumar, Kaushalya Foundation. On this rice field day, the farmers were found very happy in adopting the two varieties. The Swarna Shreya rice variety was very much appreciated by the farmers of East Champaran. During this *Kharif*, sudden flood and drought conditions occurred in that area and despite that Swarna Shreya variety provided 40-45 quintal/ha. It indicates a good potential of Swarna Shreya rice variety to withstand weather vagaries, more frequent in recent days.

A brief training was organized on crop planning and need assessment for the *rabi* season. In the training program the project team Dr. Anirban Mukherjee, Dr. Dhiraj Kumar Singh, and Dr. Kumari Shubha discussed the project activities, objectives, assessed farmers' preference and need for rabi season and other possibilities and potentials of Farmers Producer Organizations.

अनियमित बारिश व सूखे में भी तैयार हो रहा स्वर्ण श्रेया धान

एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कटाई में मौजूद वैज्ञानिक व किसान ● आगरण

जासं, मोतिहारी : बदलते जलवायु परिवर्तन के दौर में परंपरागत विधि से खेती करने वाले किसानों को नुकसान हो रहा है। जिले के किसानों को कम लागत में बेहतर उत्पादन के लिए सूखा सहनशील धान की प्रजाति स्वर्ण श्रेया वरदान साबित हुई है। उक्त बातें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्वी अनुसंधान परिषद पटना के वैज्ञानिकों की टीम का नेतृत्व कर रहे वैज्ञानिक डॉ. अनिर्बन मुखर्जी ने कही। वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. धीरज कुमार व डॉ. शुभा कुमारी भी मौजूद रहे। शनिवार को जिले के चंपारण कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के माध्यम से एनएएसएफ परियोजना विकास व आवश्यकता आधारित प्रौद्योगिकी वितरण मॉडल के सत्यापन के तहत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पटना के वैज्ञानिकों की मौजूदगी में एक दिवसीय प्रशिक्षण सह स्वर्ण श्रेया कटाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषि प्रसार वैज्ञानिक डॉ. धीरज कुमार सिंह ने बताया कि स्वर्ण श्रेया प्रजाति के धान का बीज अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण योजना के तहत आइसीएआर पटना द्वारा कौशल्या फाउंडेशन के माध्यम से चंपारण कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के किसानों को उपलब्ध कराया गया। फसल तैयार होने के उपरांत आइसीएआर पटना एवं कौशल्या फाउंडेशन की देखरेख में फसल की कटाई की गई। इस दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को प्रजाति के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि अनियमित मानसून एवं सूखे की वजह से धान की पैदावार कम होती है। इसको लेकर किसानों को स्वर्ण श्रेया बीज का उपयोग कर बेहतर उत्पादन लेना चाहिए। मौके पर फाउंडेशन के कृषि विशेषज्ञ राहुल कुमार गौतम, प्रबंधक अविनाश कुमार सहित बड़ी संख्या में किसान मौजूद थे।

स्वर्णा श्रेया धान की कटनी सह प्रशिक्षण में शामिल हुए किसान

कटनी कर किसानों के साथ कृषि वैज्ञानिक.

प्रतिनिधि,मोतिहारी

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्वी अनुसंधान परिषद पटना के वैज्ञानिकों की टीम ने किसानों के लिए सूखा सहनशील धान की प्रजाति स्वर्ण श्रेया की खोज की जो पूर्वी चंपारण के किसानों के लिए वरदान साबित हुई है.

शनिवार को जिले के चंपारण कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड माध्यम से एन.ए.एस.एफ परियोजना विकास और आवश्यकता आधारित प्रौद्योगिकी वितरण मॉडल के सत्यापन के तहत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पटना के तीन वैज्ञानिकों द्वारा पूर्वी चंपारण में एक दिवसीय प्रशिक्षण सह स्वर्ण श्रेया कटाई समारोह का आयोजन किया गया . इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिक, कृषि प्रसार डॉ धीरज कुमार सिंह ने बताया कि स्वर्ण श्रेया प्रजाति का धान का बीज अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण योजना के तहत आइसीएआर पटना द्वारा चंपारण कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के कृषकों के बीच दिया गया था .इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिक डॉ. अनिर्बन मुखरजी, डॉ. धीरज कुमार, एवं डॉ. शुभा कुमारी मौजूद थे.

स्वर्ण श्रेया धान, किसानों के लिए वरदान, कम लागत में ज्यादा उपज

कुमार तेजस्वी

मोतिहारी। बदलते जलवायु परिवर्तन के दौर खेती कम जागरूक किसानों के लिए घाटे का सौदा बनता जा रहा है । सूबे के किसानों के इन्हीं चुनौतियों के सामना करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्वी अनुसंधान परिषद पटना के वैज्ञानिकों की टीम ने किसानों के लिए सूखा सहनशील धान की प्रजाति स्वर्ण श्रेया की खोज की जो पुर्वी चम्पारण के किसानों के लिए वरदान साबित हुई है।

आज शनिवार को जिले के चंपारण कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड माध्यम से एन.ए.एस.एफ परियोजना विकास और आवश्यकता आधारित प्रौद्योगिकी वितरण मॉडल के सत्यापन के तहत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पटना के तीन वैज्ञानिकों द्वारा पूर्वी चंपारण में एक दिवसीय प्रशिक्षण सह स्वर्ण श्रेया कटाई समारोह का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को उत्पादक संगठन के माध्यम से आवश्यकता आधारित प्रद्यौगिक हस्तातरण मॉडल का विकास एवं मान्यकरण था। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिक, कृषि प्रसार डॉ धीरज कुमार सिंह ने बताया कि स्वर्ण श्रेया प्रजाति का धान का बीज अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण योजना के तहत आइसीएआर पटना द्वारा कौशल्या फाउंडेशन के माध्यम से चंपारण कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के कृषकों के बीच दिया गया था । फसल तैयार होने के उपरांत आइसीएआर पटना एवं कौशल्या फाउंडेशन ने अक्टुबर 17, 2020 को एक दिवसिय प्रशिक्षण सह कटाई समारोह रखा गया । इस दौरान वैज्ञानिकों ने कृषकों को प्रजाति के बारे में विस्तार से बताया।

उन्होंने बताया कि अनियमित मानसून एवं सूखे की वजह से धान की पैदावार कम होती है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए स्वर्ण श्रेया बीज काफी उपयोगी साबित हुआ है। आम बीज की तुलना में 40 प्रतिशत कम पानी की जरुरत पड़ती है। धान की इस उत्कृष्ट किस्म की विशेषता यह है कि यह अर्द्ध सूखे की स्थिति में भी बेहतर परिणाम देती है। यह प्रजाति कम अवधि का धान है जो 115 दिन में पककर तैयार हो जाता है और 45-50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देता है।

वैज्ञानिकों ने कृषकों को वैज्ञानिक पद्धति का अत्यधिक प्रयोग करने का आह्वान किया। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिक डॉ. अनिर्बन मुखरजी, डॉ. धीरज कुमार, एवं डॉ. शुभा कुमारी मौजूद थे। कार्यक्रम में कौशल्या फाउंडेशन के कृषि विशेषज्ञ राहुल कुमार गौतम, प्रबंधक अविनाश कुमार भी मौजुद थे।